रात्रि क्लास 16/9/68:– बाप आकर सभी को बहुत मीठा बनाते हैं क्योंकि बाप प्यार का सागर है तो मीठे2 प्यारे ते प्यारे बातें सुनाते हैं। जैसे कहा जाता है ना यथा राजा–रानी..... सतयुग में तो बहुत मीठे होते हैं। इतने मीठे हो गये हैं अभी तक उन्हों को प्यार से पूजते हैं। गोद में लेते हैं। राजकुमार सो फिर महाराजा बनते होंगे। वहाँ कब भी देहाभिमान आदि नहीं होता। कोई भी ध्यान में नहीं। मूल कारण है ही पवित्रता। वहाँ रावण ही नहीं तो देहाभिमान वहाँ होते ही नहीं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा सतयुग–त्रेता में रावण होता ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझदार बन रहे हो। पुरुषार्थ कर रहे हो। परिस्तान के लायक बनने। और कोई परियाँ हो नहीं सकती। हर प्रकार की खुशी, धन–दौलत, ब्यूटी वहाँ होती है। और बहुत समय के लिए है। सन्यासी यहाँ के लिए कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। वहाँ की भेंट में यहाँ अल्प काल क्षणभगुंर सुख है। कोई मरता है तो कितने वर्षों तक उनको याद कर दुखी होते हैं। वहाँ तो दुख की बात ही नहीं। बच्चे समझते हैं इनका राज्य बाप ही स्थापन करते हैं। सो अब कर रहे हैं। बच्चे जानते हैं राज्य स्थापन हो रहा है। यह है आसुरी दुनिया। देवताएँ कब लड़ते नहीं। अभी तुम ब्राह्मणों की है माया के साथ लड़ाई। वहाँ तो रोना आदि होता नहीं। जो रोयेंगे वह कम पद पावेंगे। जिन रोया तिन खोया। यानी ऊँच पद खोया। बेहद के बाप से इतना वरसा लेते हो। जब कि बेहद के बाप के बने हैं तो उनकी मत पर अगर ठीक से चलेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। अज्ञान काल में बहुत धन दान करते हैं तो राजा के घर जन्म लेते हैं। वह भी अल्पकाल का सुख होता है। इसलिए इस समय के लिए कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। बहुत दुख है तो उनमें सुख थोड़ा है। काग विष्टा समान। इसलिए खबरदार रहना पड़ता है। हमसे कोई उल्टा काम तो नहीं होता। बाप बच्चों को सुख का वरसा देते हैं तो बच्चों को भी कहेंगे तुम अपने भाइयों को सुख का वरसा दो। सिर्फ कल्प की आयु लम्बी कर देने से मनुष्यों को मुँझ होती है। यह भी ड्रामा में है। बच्चे भी समझते हैं बरोबर मनुष्यों की बुद्धि में बहुत ही घोर–अंधियारा है। तुम कितना समझाते

हो। बाबा भी लिखते हैं सिर्फ यह समझाओ पवित्रता बिगर मनुष्य का कैरेक्टर्स सुधरता नहीं। अभी तुम 5 विकारों पर जीत पहन रहे हो। वहाँ तो रावण–राज्य होता ही नहीं। जीत पाने से पद भी ऐसा मिलेगा। बच्चों का फर्ज है पढ़ाई पर अटेन्शन देना। हम से कोई ऐसा अकर्तव्य कार्य न हो जो हमारे पद को धक्का लगे। जानते तो हो यहाँ पढ़कर फिर पढ़ाया जाता है। सभी को बेहद के बाप का परिचय देना है। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। पावन दुनिया में सुख ही सुख है। रावण को जलाते भी हैं तो भी यह बुद्धि में नहीं है हम रावण राज्य के हैं। अभी तुम हो राम के सम्प्रदाय। सतयुग में रावण राम की बात होती ही नहीं। यहाँ दुख में याद आता है रामराज्य भी बीत गया अभी रावणराज्य है। दिखाना चाहिए भगवानुवाच तुम अभी इस रावण राज्य में आसुरी सम्प्रदाय हो। देवताएँ रहते हैं स्वर्ग में, असुर रहते हैं नर्क में। संगम को ही उठाना होता है। नालेज बहुत सहज है। इस समय तक बच्चे जो भी सर्विस कर रहे हैं कल्प2 यही होगा। ऐसे ही सर्विस होगी। देखने में आता है मज़ा समझाने में है। म्युजियम में समझाना बहुत पड़ता है। आगे चल ऐसी युक्ति रचेंगे जो बहुत छोकड़े आदि न आये। जास्ती हंगामा जहाँ–तहाँ स्टुडेन्ट्स का ही होता है। पत्थर मारने में देरी नहीं करते। और बहुत हानि होती है। तुम बच्चों को तो शान्ति स्थापन करनी है। तुमको लिख देना चाहिए हम ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ जो गवर्मेन्ट वा सारी दुनिया विश्व में शान्ति चाहते हैं वह विश्व में शान्ति का राज्य हम स्थापन कर रहे हैं। तुम करते हो गुप्त। वह तो सभी तैयारी करते रहते हैं। तुम सेना ही हो गुप्त। कोई को पता भी न पड़े कि यह कोई वारियर्स है। तुम्हारी लड़ाई वन्डरफुल है। बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकम याद करो। बस। बच्चे जानते हैं हम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनने का है। बाप ने युक्ति बहुत अच्छी बताई है। बाप को याद करने से शान्ति ही रहती है। मुख से कुछ भी बोलना

नहीं होता। बाप है शान्ति का सागर। हम अशान्ति के सागर थे। फिर बाप शान्ति के सागर से इतने शान्त बनते हैं जो फिर 21 जन्म अशान्त का अक्षर मुख से न निकलेगा। यह ड्रामा में पार्ट नुँधा हुआ है। शान्ति में बैठे2 कलोरोफार्म चढ़कर शान्त हो जाते हैं। जरा भी कोई प्रकार का दुख नहीं होता। मनुष्य चाहे तो एक सेकण्ड में जा सकते हैं; परन्तु शरीर में होता है ना। किसको दुख से छुड़ाना पुण्य का काम है ना। दुखी हैं, बहुत रोगी हैं तो उनको ऐसे दुख से छुड़ा देना चाहिए। आत्मा को बहुत तकलीफ है तो कुछ देकर मुक्त कर देना चाहिए तो जाकर दूसरा शरीर लेंगे। मनुष्य डूबते हैं या अपने को आग लगा देते हैं। बेहोश हो जाते हैं। अनकॉन्सस होने में फिर कुछ फील नहीं होता। वहाँ तो कोई भी दुख होता नहीं। समय है थोड़ा। 6, 8 वर्ष। बीमार ही रहें इससे शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेवें ना। थोड़ा टाइम दुखी ही रहे इससे क्या फायदा। बाप रहमदिल है ना। जानते हैं अकाल पड़ेंगे। तो फिर दुखी होंगे, झगड़े आदि होंगे। पाकिस्तान में हर एक चीज़ बहुत सस्ती है। छोटा टुकड़ा है ना। अभी तो बच्चों को प्रैक्टिस करनी है जैसे कि हम इस दुनिया में हैं ही नहीं। आन्तरिक खुशी रहनी चाहिए। बाबा तो समझाते हैं तुम्हारे लिए अभी स्वर्ग चलने का समय हो गया है। तो खुशी होगी ना। अच्छी रीति समझाना चाहिए। यह रावण राज्य है यह राम–राज्य। यहाँ तो अपरमअपार दुख है। वहाँ अपरमअपार सुख है। तुम पुरुषार्थ करते हो फिर भी समझते हो ड्रामा में जो नूँध है वही होता है। सतयुग से लेकर तुम पूरा पार्ट बजाते आये हो। फिर सतयुग में वही पार्ट शुरू होगा। यही मास, यही वर्ष, यही मिनट, सेकण्ड पास होते जाते हैं। आजकल करते यह समय आ गया है बाप के आने का। बाप ने ही आकर समझाया है। अभी मीठे2 बच्चों को इस पुरानी दुनिया से, रावण की दुनिया से, छी छी दुनिया से अब वैराग्य आना चाहिए। भल समझते हो विलायत में जैसे नया स्वर्ग है; परन्तु यह है पॉम्प माया का। समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। अचानक ही उन्हों का स्वर्ग आदि उड़ जावेगा। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।